सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2024 का अष्टम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक वैशाख मास विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित **'देश की रग-रग में व्याप्त - महादेव'** नामक लेख में शिव की महिमा बताया गया है। तत्पश्चात् डा. विश्वावसु गौड एवं प्रो. वैद्य बनवारी लाल गौड़ द्वारा लिखित **'नियत भोजनकाल'** लेख में आयुर्वेद से स्वस्थ जीवन के लिए भोजन के समय के बारे में बताया गया है। इसी क्रम में श्रीमती प्रतिभा गर्ग द्वारा लिखित **'मातृदेवो भव (मातृसंस्था और उसकी गरिमा)'** लेख में माता के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। तत्पश्चात् श्री स्वामी माधवानन्दजी महाराज द्वारा रचित **'माधवानन्द आनन्द प्रकाश'** दोहा में गुरु की महिमा के बारे में जानकारी दी है। साथ ही प्रोफेसर अनूप कुमार गक्खड़ द्वारा लिखित **'बिना संस्कृत के आयुर्वेद का ज्ञान सम्भव नहीं'** नामक लेख में संस्कृत द्वारा आयुर्वेद के ज्ञान पर प्रकाश डाला है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा